स्यमन्त-हरण यात्रा

(दैत्यारि ठाकुर)

श्री कृष्णाय नमः

श्लोक

नमः कृष्ण विष्णोऽच्युतानन्त-शक्ते,
नमो रामराजीवनेत्र प्रभो ते ।
नमो ब्रह्ममूर्ते मुरारे परेश,
नमो विश्ववास प्रसीद प्रसीद ॥१॥

अपिच

गजेन्द्र पराक्रमं निर्जित्य ऋक्षम्,
मुदालीलया देवकीनन्दनो यः ।
प्रियं स्यमन्तकं जहार प्रियार्थम्,
परेशाय कृष्णाय तस्मै नमो मे ॥२॥

नान्दी गीत

राग सुलाइ । जोतिमान ।

भु०—जय-जय नन्द-नन्दन ।
तुअ पाये करहुँ वन्दन ॥
पद—जोहि ऋक्ष जिनि यदुपति ।
मनि सभे पाइला जाम्ब अति ॥
आपुनि कलंक करि दूर ।
भेला प्रभु अनिन्द प्रचुर ॥
माधवर पादपद्म जने ।
बालक दैत्यारि प्रभु भने ॥३॥

नाट्यन्ते सूत्रधारः, अलमति विस्तरेण । प्रथमे श्रीकृष्णं नत्वा सभासदः प्रत्याह ।

श्लोक

भो भो सभासदः साधू शृणुध्वं अद्ययाधुना ।
स्यमन्तहरणं नाम नाटकं मुक्तिलाभकम् ॥४॥

अथ भटिमा

जय जय परम, पुरुष परमानन्द, नन्दनन्दन बन चारि ।
जय भक्त भय, भंजन गोविन्द, आनन्द विपिन विहारी ॥
अघबक केसि धेनुक पुतना, माल्लमारि कंसघालि ।
कालिय निकालि, संखचूर मारि, गोपिजन प्रतिपालि ॥
सत्राजित वाद, कलंक सुनिये ऋक्षपति रने जिनि ।
आपुन कलंक, दूर करि प्रभु स्यमन्तक दिया आनि ॥
जाम्बवति सत्य-भमाक विवाह, कयलि दर्प प्रचुर ।
ओहि भगवंत कृष्ण कृपामय, धाता सकल सुरासुर ॥
ब्रह्मा संकर लक्ष्मी जाकर चरणेहि करे निते सेवा ।
तृभुवनकारण, तारन सकल ओ हरि देवक देवा ॥
भूमिकभार, उतारल तारल, नर रूप धरि अविराम ।
सुन साधुजन, हुया सावधान कृष्णक गुन अनुपाम ॥
सोहि महेस्वर, कृष्णक नाटक, स्यमन्त हरण आहे नाम ।
सुन सभासद छन्दोक आपद, डाकि बोल्हु राम राम ॥५॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, जे सुरासुर वन्दित पादपद्म, परम पुरुष पुरुषोत्तम, ओहि नारायण, कलिर मलिन मनुष्य-निस्तार कारणे, देवकित हन्ते, वेकत भेल, सोहि श्रीकृष्ण, ओहि सभामध्ये, प्रवेश करकहुँ, स्यमन्त हरण लीला जात्रा, परम कौतुके करब, ताहे देखह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल, इति ज्ञात्वा सर्वे सावधाने स्थीयताम् ।

पुन सूत्रधार—(आकाशे कर्णं दत्वा) आहे संगि, की वाद्य सुनिये ?

संगि—आहे संगि सखि, देव-दुन्दुभि बाजत, आहे देव-दुन्दुभि बाजत । अः श्रीकृष्ण प्रिया रुक्मिनि सहिते मिलल मिलल ।

श्लोक

प्रवेशमकरोद्देवो रुक्मिण्या सह केशवः ।
लीलागतिर्लसत्कान्तिः श्रीकन्तः कामकोटिजित् ॥६॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, हामु जाहेरि कथा कहैछि सोहि श्रीकृष्ण प्रिया रुक्मिनि सहिते, ओहि सभा मध्ये, प्रवेश करे, ए आवत ए आवत ।

इति सूत्रः निष्क्रान्तः ।

गीत

राग सिन्धुरा । एक तालि ।
कौतुके करे प्रवेसि यदुमनि ।
संगे चलल सखि सबे रुकमिनि ॥

पद—कण्ठे कौस्तुभमनि करु परकास ।
स्यामल अंगे सोभित पीतवास ॥
चरणक रंजि मंजिर करु रोल ।
ताहे भक्तोक मन देखारि बोल ॥७॥

सूत्र०—आहे समाजिक लोक, ऐचन प्रवेस करए, श्रीकृष्ण प्रिया रुकमिनि सहित, एक पास हुया रहल । तदन्तरे राजा सत्राजितक प्रवेस सुनह ।

श्लोक

सत्राजितः समोभाग्यः सूर्ये आराधनस्तथा ।
स्यमन्तमणिशोभित्त्व सभामध्ये उपस्थितः ॥८॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, सत्राजित प्रवेस करे आवत, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग कानडा । परिताल ।
आवे सत्राजित तप करिते ।
सूर्य आराधिते एकान्त चिते ॥

पद—हाते गले सिरे रुद्राक्ष जोताजोत ।
कान्धे उतरि नव चराचर फोट ॥
भोङ्कार दाढ़ि गोंफ जटा सोहे माथे ।
दण्डकमण्डलु धरिए दुनो हाते ॥
गाथे बाघछाल उर्द्धक चाह ।
एक पदे थिक सूर्यक थियाइ ॥९॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक ऐचन प्रवेस कये, सत्राजित सूर्यक आराधन करिते रहल ।

श्लोक

सूर्याश्च परमतुष्टः सत्राजित समीपगः
मणिसमो महाबाहु सभामध्ये उपस्थितः ॥१०॥

सूत्र०—तदनन्तरे सूर्य, सत्राजितक भकति देखिए, परम सन्तोष हुआ, जैसे सत्राजितक समिप आवल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग आसोआरि । परिताल ।
आवल दिनकर रथे चढ़िया रे ।
देव सिद्ध सब चले बेरिआरे ॥

पद—गौरांग अंग रक्त वस्त्र गावे ।
दिस प्रकासित जाहे प्रभावे ॥
हाते सरधुन धरि करे हास ।
माथे स्वेत छत्र कच परकास ॥११॥

सूत्र०—ऐचन परकारे, सूर्य आसि कहुँ सत्राजितक तप देखिये बोलल ।

सूर्य—अये सत्राजित, हामु तोहारि भकतित परम सन्तुष्ट भेलु, तोहाक हामु प्रसाद देहु । ओहि स्यमन्त मनि लया जाय ।

सूत्र०—ओहि सुनि, सूर्य सत्राजित हाते मनि दिए, मनिर महिमा कहिते लागल ।

तदनन्तरे, सूर्य सत्राजितक मनि दिए, आपुन थाने चलल । सत्राजित मनि पावा, महा भक्ति कए द्वारकापुरे आपुन गृहे जैसे चलल ।

सोहि समये द्वारकार प्रजासब सत्राजितक नाजानि, आदित्य आवल बुलि, भये सचकित हुआ, लवरि श्रीकृष्णत जान देलह ।

प्रजासब—हे परम ईस्वर, तोहारि चरने कोटि कोटि प्रनाम करहुँ, तुहुँ देवक परम देवता, मनुष्य-चेष्टा देखाइए, गुप्त स्वरूपे थिक । देखु तोहाक देखिते, सूर्य देवता आवल ।

सूत्र०—प्रजासबक बानि सुनिए श्रीकृष्ण अल्प हास्य कय, जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—अये द्वारकावासि प्रजासब, ओहि सूर्य नुहि । सूर्यक आराधिये, सत्राजित स्यमन्त मनि पावल, सोहि मनिर रश्मिए प्रकासित हुआ, सत्राजित निज गृहे आवत । तोहा सब भय नाहि करवि ।

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, ताहे सुनि प्रजासब आनन्दे कृष्णक प्रनामि, निज थाने गेलह । इ कथा रहोक । अनन्तरे सत्राजित, निज गृहे आवल, देवक मन्दिरे मनि थापित कयलु । तदनन्तरे विप्रक आनि मनि पूजिते लागल । ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग कानड़ा ।
हाते मनि लया त्रिप्र चले धिरे धिरे ।
सत्राजित चले हासि देवक मन्दिरे ॥

पद—नाना भक्तिभावे निया मानिक थापिला ।
सत्राजिते पड़ि धरे अष्टांगे नमिला ॥
हरि भक्ति एहि सिहो आन सेवाकरे ।
बोला हरि हरि सभासद निरन्तरे ॥१२॥

सत्राजित—अये प्रजासब, ओहि मनिक महिमा कि कहब ? अ, स्यमन्त मनि जथात थाकये, तथात मारि मरकत, सर्प अग्नि आदि त्रिघिन ना पावय, प्रति दिने सुवर्ण अष्टभार स्रवय । ओहि मनि देवत उत्तम ।

सूत्र०—ओहि बुलि सत्राजित, देवग्रहे मनि पूजिये, आनन्दे रहल। अनेक दिन मनि पूजि विस्तर सुवर्ण पावल। धनगर्वे अन्ध हुआ, महन्तक गनये नाहि। इ कथा रहोक। आहे सामाजिक लोक, श्रीकृष्ण उद्धव सात्यकि समे, सुधर्म्मा सभाक चलल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल।

गीत

राग तुर भाटियालि। जोतिमान॥

चलये गोविन्द, सुधर्म्मा सभाये,
उद्धव सात्यकि संगे।
जय जय रव मिले महोत्सव,
द्वारका पुरि भरि रंगे।

पद—ताल करताल मृदंग कोलाहल।
संख दुन्दुभि रोले।
छत्र ध्वज दंड छिरल चामर।
घने बहुविध लोले।
श्वेत चामर धुलाइ दुइ पासे।
भक्ति भावे भक्त जने।
जय जय बोल करे घने घन।
बालक दैत्यारि भने॥१३॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, ओहि प्रकारे उद्धव सात्यकि समे, श्रीकृष्ण सुधर्म सभात प्रवेसल। कोटि ब्रह्माण्डक रूपे चमत्कार लगाए, यदुवीर सब सहिते, तथि रहल। सोहि समये ओहि सभा मध्ये सत्राजित गेलाह। श्रीकृष्ण अल्पहास्य करिए, सत्राजितक जे बोलल।

श्रीकृष्ण—अये सत्राजित, तोहाक हामु एक बचन बोलोहों, ता सुनह। तुहुँ सूर्यक आराधिए स्यमन्तक मनि पावलि, से मनित हन्ते तोहारि खागे माने अर्थ भेल। एबे मनित प्रयोजन नाहि; ओहि देवक मनि, तुहु मनुष्य अल्पचित्त। से मनित हन्ते काले बहु दुख पावब, ओहि मनि राजा उग्रसेनक देह।

सूत्र०—ताहे सुनिए, सत्राजित परम क्रोधमने कृष्णक ना माति, आपुन गृहे चलिए गेल। तदनन्तरे सत्राजितर कनिष्ठ भाइ, ताहार नाम प्रसन्न, से घोड़ात चढ़ि, कण्ठत स्यमन्तक मनि पिन्धि, जेवे मृग मारिते बिपुवने चलल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल।

पयाड़ गीत

राग कानड़ा। परिताल।

कण्ठत मनि पिन्धि प्रसन्न वीर।
घोड़ात चढ़ि धरि धनु तीर॥

पद—पसुक मारि फुरे बने बने।
मृग आसि आगे भैल उपसने॥
सघने दिस पास उर्द्धक चाइ।
कोमल तृन आन्चि आन्चि खाइ॥
घोटक सहिते देखि प्रसेन।
पलाइ मृग गोट चित्रुत जेन॥
पाछे पाछे खेदे प्रसन्न वीर।
सिंघक आगे आसि भेल थिर॥
घोटक सहिते मारि प्रसन्न।
कण्ठर छिण्डि लैला स्यमन्त॥
सिरत पिन्धि रंग करि सिंघ।
चढ़िल गया पर्वत सिंघ॥
देखि जाम्बवन्त वीर बिसाल।
सिंघक धाया गैल ततकाल॥
दुर्घोर जुझ सिंघ समे कैल।
सिंघक मारि स्यमन्तक निल॥
पाछे जाम्बवन्त गर्त पसिल।
उमलिबे लागि सिसुक दिल॥१४॥

सूत्र०—ऐचन प्रकारे प्रसन मृग मारिते, बिजु बने प्रवेसल, सोहि बन मध्ये, सिंघे पाइ, प्रसनक मारि कहु, मनि निआ गेल। अनन्तरे ऋक्षराज जाम्बवन्त, सिंहक मारि, मनि निया, सुकुमार नाम कुमारक उमलाइते, ललिता नामे धाइर हाते देलह। हाते मानि लया, धाइ सिसु उमलाइते लागल। इ कथा रहोक। आहे सामाजिक लोक, तदनन्तरे पर दिन सत्राजित, भाइ नासिवार देखिये, कान्दि कान्दि प्रजासबक बुलिते लागल।

सत्राजित—हा हा प्रान भाइ, स्यमन्तक मनि पिन्धि मृग मारिते गेलि, स्यमन्त मनि सर्व बिघिन नासक, से मनि रहैछे, एकोवे संका नाहि, किन्तु श्रीकृष्ण पूर्वे, राजाक मनि दिते कहल। हामु नहि देलहुँ, देखो ताहेक निमित्ते कृष्ण हमारि भातृक मारल, हा हा भैयाइ, मनिर निमित्ते तोहाक हरु आइलु। पूर्वे जानु कृष्णर निमित्ते, भाल वस्तु राखिते पारबे नाहि। कृष्णक समान दुर्जन नाहि, अवस्ये भाइक मारि मनि लेलह।

सूत्र०—ओहि बुलि, सत्राजित जैचे [illegible] (विलाप) कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल।

गीत

राग गौरी। विषमताल।

कान्दे सत्राजित, सोके आकुलित,
नयनक नीर बहि जाइ।
गृह सून्य करि, मोक परिहरि,
कोइक गइलि प्रान भाइ॥

पद—दुष्ट जदुराइ, बुजिया न पाइ, भाइक मारि निला मनि॥
बेकत न कहे माधवक डरे, लोके करे कानाकानि॥
हरि हरि भाइ, तोहोक न पाइ, सोके दहे मोर गाव॥
दीन हीन कहय दैत्यारि, प्रनामि माधव पाव॥१५॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, देखु देखु विष्णु वैष्णवक, अवहेला करिते, अतये बिघिन मिलल, प्रमान सत्राजितक देखह, आनि विष्णु वैष्णवक चिन्ति, हरि बोल हरि बोल।

सूत्र०—ऐचन परकारे, सत्राजित तथि रहल। ताहेर बचन सुनिए, सब लोक बुलिते लागल, श्रीकृष्ण प्रसेनक मारि मनि लैया गेल। सत्राजितर ऐचन कथा कथक सुनिए, श्रीकृष्ण विस्मय हुया जे बोलल।

श्रीकृष्ण—आः हामु मिछात कलंक पावलु, अब हामु आपुन कलंक, आपुने दूर करब।

सूत्र०—आहे समाजिक लोक, ओहि बोलि श्रीकृष्ण, भाल नगरिया-लोक संग लया, प्रसनर घोड़ाक खोज चाहिते, जैचे अरन्ये चलल, ता देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल।

पयार

राग श्री।

प्रसनर पन्थे चलि कान्ते दामोदर।
अरन्ये निश्चल सिंहो खोज घोटकर॥
घोड़ा सने प्रसन पड़िया आछे तथ।
सिंघे मारि मन निला जानिलो निश्चय॥
देखिया बिस्मय भैला सर्बलोक जन।
मिछात कलंक पाइला देवकि नन्दन॥
एहि बुलि लोक सिंघ खोज गुरि जाइ।
देखे सिंघ पड़ि आछे दाखा निकटाइ॥
भालुके निलेक मनि मारिआ सिंघक।
खोज गुरि भालुकर पाइलेक गर्तक॥
कहय दैत्यारि दासे एड़ा आन काम।
पातेक छाड़ोक डाकि बोला राम राम॥१६॥

सूत्र०—भयंकर गर्त्त देखिए श्रीकृष्ण जे बोलल।

श्रीकृष्ण—अये नगरिवासब, तोरासब एथा हमाक अपेक्षि रह, हामु गर्त पसिए मनि आनो गिया ।

सूत्र०—ओहि बोलि श्रीकृष्ण, मनिक निमित्ते गर्त्ते पसल ।

पुनु गीत

देखि सब सेनागन बाहिरत गेइ ।
एकल चरे गर्ते कृष्ण प्रवेसिला गेइ ॥
तथाए देखिला कृष्णे मनि स्यमन्तक ।
हाते लैया धाइ उमलावे बालकक ॥
मनि काढ़ि लैबे मने प्रभु दामोदर ।
चापिलेक गैया सिटो धाइर ओचर ॥१७॥

सूत्र०—श्रीकृष्ण, गर्तर भितरे पसिये देखल, एक धाइ स्यमन्त मनि लया, सिसु उमलाइते आछय । श्रीकृष्ण पीतवस्त्र कटित काछि, काढ़ि लैबाक प्रति, जैचे मनिर कारचर चापल, देखि धाइ भये आर्त्त राबे जे बोलल ।

धाइ—अये रिक्षराज, कोथेर मनिछ गोटे, मनि काढ़ि लया जाइ । तुहुँ सत्वरे आव, सत्वरे आव ।

पुनु गीत

कोथेर मनिछ गोटे मनि नेइ काढ़ि ।
एहि बुलि भये धाइ दिला दीर्घ गेरि ॥
सुनि जाम्बवन्त ततिखने भैला बाज ।
डाकि राम राम बोला समस्ते समाज ॥१८॥

सूत्र०—धाइर आर्त्त राव सुनिए, जाम्बवन्त खेदि आसि, जैचे सम सम हुआ, युद्ध कअल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल, हरि बोल ।

गीत

राग सारंग । परिताल ।
मनि नेइ सुनि जाम्बवन्त वीर ।
आइला धाइ कोपे कम्पाया सरीर ॥

पद—देखिया कृष्णक जलिला कोप ।
लगाइला युद्ध करिया आटोप ॥
कता वृक्ष सिला माथात हाने ।
मुष्टक मुष्टे ठेका मारे टाने ॥
बाहुवे बाहुवे माल बान्धे धरि ।
मरिक भरि छन्दि धाके खसे परि ॥
धाम्बर चोटे भांगे हार धार ।
आक्रान्तत दुहु करे कोलाहल ॥
एडिया कतहों हन्त अन्तर ।
दोरघोर युद्ध स्वामि किंकर ॥
कोपे चक्षु पकाइ सघने चाल्ल ।
तर्जय गर्जय काम्रुरिया दान्त ॥
कृष्णर प्रहारे जाम्बवन्त राइ ।
भैला श्रान्त आर चेतन नाइ ॥१९॥

सूत्र०—आह सनाजिक लोक, कृष्णर प्रहार पाइ जाम्बवन्त वीर मृतक स्वभावे पड़ल, कतो खने स्वस्थ होइ, कृष्णक परम ईश्वर जानि, तुति करिते लागल ।

जाम्बवन्तार तुति ।

पयार ।

जय जय राम भुवन ईश्वर ।
ब्रह्मा संकर बाहेरि किंकर ॥
सकल जगत तुहुँ अधिकारि ।
सृष्टारो स्रष्टा तुमि मुरारि ॥
तुहुँ नियन्ता जीव ईश्वर ।
नाहि आदि आन तोमात पर ॥
तुमि इष्टदेव मोर श्रीराम ।
तुवा पाये परि करहुँ प्रनाम ॥

सेतु बान्धि तुहु सागर तरिला ।
रावन बधि सीता उद्धारिला ॥
सोम्भर आगे सीता अण्टाइल ।
तोहाक प्रभु आवे जानिलो ॥
जगत ईश्वर तुमि श्रीराम ।
चरणे पड़ि करहुँ प्रनाम ॥२०॥

कथा—हे परम ईश्वर, तुहुँ देवक देवता, तोहाक नजानि अहंकार कयलु, मोहोर पाप मरख गोसाञि, किन्तु पुछोहों, एहि थाने कि काजे आवलि ?

सूत्र०—ओहि बुलि जाम्बवन्त, कृष्णक परम ईश्वर जानि परि प्रनाम कयल, श्रीकृष्ण हाते धरि तोलि, बिचेष्टा हैन देखि, अमृत हाते ताहर सरीर मार्जल। कृष्णर परस पाइ जाम्बवन्त स्वस्थ भल। तदनन्तर तुष्ट हया, श्रीकृष्ण मेघ गम्भीर बचने जे बोलल।

श्रीकृष्ण—हे रिक्षराज, कृष्णे मनि निया गेल, बुलिवे सत्राजित हामाक कलंक बाद देलह। स्यमन्त मनि निये, हामु कलंक दूर करब, ओहि कारणे तोहार थाने आवलु थिक। तुहुँ हामार परम भकत, इहा जानि ओहि मनि हामाक देहु।

सूत्र०—श्रीकृष्णर ऐचन वाक्य सुनिये, जाम्बवन्त परम आनन्दे, जाम्बवति नामे आपन दुहिता रंगे कृष्णक बिवाह देलह। स्यमन्त मनि लगे जौतक देलह। श्रीकृष्ण जाम्बवतिक पाइ, परम आनन्दे द्वारकापुरि चलल। इकथा रहोक। आवे सामाजिक लोक, गर्तर बाहिरे कृष्णक आपेखि जतलोक रहैचे, बाढ़ दिन बाट चाइ आछय। श्रीकृष्ण ना सिवार देखिये, निवर्तिये गैया द्वारकात जान देलह।

नगरिया—अये बन्धु-बान्धवसब, श्रीकृष्ण अरन्ये पसिवे, प्रसन्नक बिचारल, देखल घोड़ा समे प्रसन्नक मारि सिंघे मनि निया गेलु। तदनन्तर सिंघक मारि भालुके मनि निया गेल। ताहे देखिए श्रीकृष्ण, खोज गरि गैया, भालुकर गर्त पावल, हामु सब बाढ़ दिन बाहिरे रहलु। कृष्ण नावल। कृष्णर किवा आथन्तर मिलल, हामु सबे नाहि जानलु।

सूत्र०—ऐचन बिप्रिय बानि सुनि, वसुदेव-देवकी, उग्रसेन आदि द्वारकावासिसब आर्तरावे क्रन्दन कय लागल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल।

गीत

राग कामोद। छुतिकाला।

कान्दे देवकि सति, वसुदेव समनिति,
सोके जेन जाइ प्राण फुटि।
फोकारय घनेघन, भैला तुह अचेतन,
पृथिवित पड़ि पारे लुटि॥

पद—पुतु पुतु पारे लुटि, हृदयवत हाने मुठि,
कैक गैला बाप यदुमनि।
मुख चन्द्र नोहे सरि, कमल लोचन हरि,
सोभे कोटि मनमथ जिनि॥
कृष्ण आसन्तक बुलि देवत साधय वर,
परि स्तुति करे एक मने।
महा मूढ़ मति हीन कहय देवारि दीन,
गति मोर माधव चरणे॥२१॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, पुनक चेनेइ आकुलित हया, हा कृष्ण बुलि हिये मुठि हानि, देवकि जेछे बिलाप कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल।

गीत

राग श्रोलोआर।

प्राणधन हरि हे गोविन्द छोते हले।
तोहाक ना देखि मोर सोके अङ्ग जले॥

पद—पुत्र सोके मरि जाजि हिये मुठि हानि।
अचेतने परि रहे देवकि रमनि॥

कहय दैत्यारि सिसु अति अल्पमति ।
जनमे जनमे मोर कृष्णत भकति ॥२२॥

सूत्र०—ऐचन बिलाप कये दैवकि घने घने, निस्वास फोकारिते रहल। तदनन्तर रुक्मिनि स्वामिक निमित जैछे विलाप कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग माउर, दोमानि परिताल ।

बिलपति रुकुमिनि माइ, मोर नयन झुराइ ।
घने घन निस्वास फोकारे, ए तनु चेतन नाइ ॥
पद—कृष्णर विरहे देहा दहे, एक तावे सुबधि कुमरि ।
कृष्णर चरण चिन्ति माइ, दिस देखु अन्धियारि ॥
हा कृष्ण हा कृष्ण जपये, ए सुठि हृदय हानि ।
कहय दैत्यारि सिसुमति, राम बोलो सबे जानि ॥२३॥

सूत्र०—ऐछन क्रन्दन करए, रुकुमिनि घने घने निस्वास फोकारि, कृष्णर चरण चिन्तिए रहल। तदनन्तरे बसुदेव दैवकि जादवजन सहिते, दैव आराधन कयल, कृष्ण आसिवार प्रार्थना कयल। तारासबर मनोरथ सिद्धि भैल। श्रीकृष्ण जाम्बवतिक आगे करिए, स्यमन्तक मनि पिन्धि, जैचे द्वारका चलल ताहे देखह, सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग बेलोआर । रूपक ताल ।

चलिलि द्वारकापुरि प्रभु जदुपति ।
स्यमन्तक मनि लैया संगे जाम्बवति ॥
पद—चरणे मंजिर मनि रुनझुन बोले ।
हेरि मुरुति मोहन मनमथ भोले ॥
देखि जदुगन आनन्दर नाहि पार ।
कन्यागने पारे रंगे उघलि जोकार ॥

पतुलि पतुलि दिए छल आलिगन ।
जय जय कृष्ण रावकरे घने घन ॥
कह दैत्यारि दास एहा आन काम ।
कृष्णर चरण धरि बोला राम राम ॥२४॥

सूत्र०—ऐचन परकारे, श्रीकृष्ण द्वारकापुरि प्रवेसल, जाम्बवतिक देखि बसुदेव दैवकि, रुक्मिनि आदि नारि सबर आनन्द मिलल। जदुगन जय कृष्ण जय कृष्ण धुलि, आग बाढ़ि आनल, श्रीकृष्ण उग्रसेन आदि जदुवीरगन सहित सुधर्म्मा सभात बैठल, सत्राजितक तथा डाकिया आनायल, श्रीकृष्ण ताहेक जे बोलल ।

श्रीकृष्ण—अये सत्राजित, तोहारि भातृ प्रसन, कण्ठे स्यमन्त मनि पिन्धिकहो, मृग मारिते गेलह। अरन्यत सिंहे पाइ, प्रसेनक घोड़ा सबे मारि मनि लेलह। तदनन्तर सिंहक मारि, जाम्बवन्त मनि निया गेल। जाम्बवन्त मनि धाइक देलह। धाइ मनि लया सिसु उमलाइते रहये थिक, देखि हामु मनि काढ़ि लइवाक मने समीप पावलु। हामाक देखिए धाइ आर्त्तराव कयल। ताहे सुनि जाम्बवन्त धाया आयल। अनन्तरे जाम्बवन्त सहिते, हामु आठासदिवस युद्ध कयलु, स्यमन्त मनि हामु आनलु। ओहि नगरिया सबत प्रमान देखह। हे सत्राजित, तुहु मिछात हामाक कलंक देलह, तोहारि स्यमन्त मनि ओहि लेहु ।

सूत्र०—ओहि बोलि श्रीकृष्ण, मनि सत्राजितर हाते देलह। सत्राजित मनि लया, लाजे अपमाने आपुन गृहे चलल, ताहे देखह सुनह निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग बसन्त । मान छुटा ।

हाते मनिलया मने गुने सत्राजित रे ।
कृष्णाक कलंक दिलो मिछात पापिष्ठ रे ॥
पद—जावे जिये लोके मोक नु बुलिबे भाल ।
महन्त सकले मोक करिबे धिक्कार ॥

किमते एड़ाइबो मंचिए लोकर ताप ।
केनमते तुष्ट हन्त जगतर बाप ॥
किमते कृष्णर मंचि रंजिबोहु चित्त ।
जगत ईश्वर केन मते हैब तुष्ट ॥
सत्यभामा कन्या मोर दियोहों कृष्णक ।
लगते जौतक मनि दिब स्यमन्तक ॥
तेबेसे सन्तुष्ट मोत हैब दामोदर ।
ने देखो उपाय मंजि आर आतपर ॥
एहि बुलि कन्या मनि दिलाह्रा कृष्णक ।
कहन्त दैत्यारि दीन माधव सेवक ॥२५॥

सत्राजित—अये बन्धुबान्धवसब, हामु श्रीकृष्णक मिछाति कलंक देलहुँ । हामाक सर्व-लोके मन्द बोलब, सोहि निमित्ते हामारि सत्यभामा नामे कन्या, श्रीकृष्णक बिवाह देयबु, स्यमन्त मनि लगे जौतक देयबु । इहात परे आन उपाय नाहि, सत्वरे बिवाहर सम्भार मिलाव ।

सूत्र०—आहे समाजिक लोक, सत्राजित परम आनन्दे, सत्यभामाक कृष्णक संगे बिवाह देलह, स्यमन्त मनिक लगे जौतक देलह, आनो बहुत जौतक देलह, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग सुहाइ । जोतिमान ।

गोविन्द करतु बिवाह हरषे ।
सिद्ध मुनिगन कुसुम बरिषे ॥

पद—गर्गे होम दियत कुस धरि ।
सर्वलोक बोले जय हरि ॥
संख भेरि मृदंग बजावे ।
रंगे गोविन्दर गुन गावे ॥

दिला नाना जौतक अपार ।
दूर्वाक्षत उरुलि जोकार ॥२६॥

सूत्र०—ऐचन परकारे, श्रीकृष्ण सत्यभामाक परम कौतुके बिवाह करावल, स्यमन्त मनि लगे जौतक पावल । आहे समाजिक लोक, श्रीकृष्ण रुक्मिनि जाम्बवति सत्यभामा क लया रत्न मय मन्दिरे प्रवेसल, आनन्दे क्रीड़ा नृत्य कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग कैल्यान । खरमान ।

करत बिहार मुरारि रंगे ।
गावे पीतबास हास परिहास
भकता रमनि संगे ।

पद—रुकुनि जाम्बवति सुन्दरि सत्यभामा
कण्ठे धरत बाहु मेलि ।
सघने कुचजुग नखक्षत सन्धाने
करत लीला रस केलि ।
कुञ्चित चिकुर चिबुक चारु अधर
कत चुम्बन बनमालि ।
कनक किंकिनि झनकित मंजिर,
उरे मालतिमाला दोलि ॥
माधव देवक चरण नमिए,
दीन दैत्यारि पहु भने ॥२७॥

सूत्र०—ऐचन नृत्य कये, श्रीकृष्ण प्रियाक आनन्द बढ़ाये, थिक, ओहि स्यमन्त हरण नाटक सम्पूर्ण भेल । हे समाजिक लोक, ऐचन परकारे श्रीकृष्ण जीवक निस्तार हेतु अवतार हुया, भकतक राखत, दुष्टक दण्ड करत । ओहि स्यमन्त-हरण कथा, जारा सबे श्रद्धाये सुनय, जारा सकले श्रद्धाये गावय, तारा सबर कलंक दुख-दुर्गति दुर होवय, अनायासे संसार तरय, श्रीकृष्ण चरणे एकान्त भकति बाढ़य, इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ।

अथ भटिमा

मुक्ति मंगल ।

जय जय देवकि नन्दन देव । ब्रह्मा हरे जाहे करे सेव ॥
जोहि सकल भुवन अधिकारि । मुकुतिक देत सोहि श्रीहरि ॥
जोहि अघ बक चानूर-घालि । यमुना ह्रदे दमल कालि ॥
सोहि गोपाल गोवर्द्धनधारि । मुकुतिक देत सोहि मुरारि ॥
कुवलय केसि कंसमाल्लमारि । पितृक मातृक बन्धन-छोरि ॥
जोहि जदुकुल पालनकारि । मुकुति करतु सोहि मुरारि ॥
जाम्बवति सत्यभामाक विवाह । कयलि जोहि करि उछाह ॥
सज्जन जन निस्तर-कारि । मुकुति करतु सोहि मुरारि ॥
करहु अब करुना जदुराइ । लेशोहों सरन तोहारि पाइ ॥
मुखे ओनो छाड़ो तव नाम । मागो अतय भिक्षा तोहारि ठाम ॥
कहय दैत्यारि दीन मतिहिन । भकत मिनति तोहारि चरण ॥
कलियुगे परम धर्म्म हरि नाम । जानि सब लोक बोलहु राम राम ॥२८॥

श्रीकृष्ण पादपद्मस्य प्रसादेन सुनिश्चितम् ।
स्यमंत हरनं नाम नाटकं पूर्णतांगतम् ॥

इति स्यमन्त हरण जात्रा समाप्त ।